© 2025 IJRTI | Volume 10, Issue 5 May 2025 | ISSN: 2456-3315

मौर्य कालीन स्थापत्य कला का अध्ययन

चंदन पांडुरंग डेकाटे
सहायक प्राध्यापक (फाइन आर्ट),
शिक्षा विभाग,
सेंट थॉमस कॉलेज, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़ - 490006

सारांश:

मौर्य काल विशेष रूप से अपनी वास्तुकला के लिए जाना जाता है। जहाँ स्तूप, गुफाएँ और स्तंभों का निर्माण किया गया, जो भव्य वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। स्तंभों के रूप में विशाल शिलालेख, ये धर्म के प्रसार के लिए बनाए गए थे। मौर्य कला में पत्थर का प्रयोग सबसे पहले माना जाता है। इस समय कला में लकड़ी के स्थान पर पत्थर का प्रयोग होने लगा था। सिंधु संस्कृति की कला के 1500 वर्ष बाद मौर्य काल में कला देखी जा सकती है, संभव है कि इतने लम्बे समय में कला को संरक्षण नहीं मिला या कला का माध्यम टिकाऊ नहीं था, जिसके कारण ये सभी कलाकृतियाँ नष्ट हो गई होंगी। अब तक इतिहास में इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है। मौर्य काल में कला को उचित संरक्षण इसलिए मिला क्योंकि मौर्य शासक कला प्रेमी थे। सम्राट अशोक के शासनकाल में स्थापत्य कला का तीव्र गति से विकास होने लगा। इसका स्वरूप स्तूपों, गुफाओं और स्तंभों तथा उन पर उत्कीर्ण शिलालेखों और गुहालेखों के रूप में है।

कूटशब्द: मौर्य कला, वास्तु कला, भारतीय इतिहास, मौर्य संस्कृति, स्थापत्य कला

प्रस्तावना:

मौर्य कला उस पहले साम्राज्य की कला है जिसने 322 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश भाग पर शासन किया था। यह भारतीय कला में लकड़ी से पत्थर की ओर एक बड़े बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। इस काल की मुख्य बचे हुए अवशेषों में गुफाएँ, स्तंभ और स्तूप शामिल हैं। राजकीय कला (राजा के अधीन किए गए कार्य) एवं प्रजा-द्वारा निर्मित लोक कला (यक्ष-परखम, चामरधारिणी यक्षी- दीदारगंज, बेसनगर यक्षिणी, मृणमूर्तियाँ और अन्य समान प्रकार की मूर्तिकला) इस तरह मौर्य कला में दो तरह की कलाएँ थी। राजप्रासाद अर्थात् शाही महल, गुफाओं का निर्माण, स्तम्भों का निर्माण और स्तूप ये सब राजाओं के अधीन बनाई गयी वास्तुकला है। इस शाही कला को मौर्य राजाओं, विशेष रूप से अशोक द्वारा संरक्षण दिया गया था। चंद्रगुप्त का शाही महल (प्रासाद) जिसका वर्णन एरियन ने किया है, यह राजकीय कला का सबसे पहला उदाहरण है। इसकी शान-शौक़त के आगे सुसा और एकबतना (प्राचीन काल के महत्वपूर्ण शहर) भी फीके पड़ जाते हैं। स्मारकीय कला के अति महत्वपूर्ण अवशेषों में शाही महल और पाटलिपुत्र शहर के अवशेष, सारनाथ में एक अखंड रेलिंग, बोधगया में चार स्तंभों पर बना हुआ बोधिमंडल या वेदी, गया के पास बराबर गुफाओं में चट्टान काटकर बनाए गए चैत्य-हॉल, जिनमें सुदामा गुफा भी है तथा इसपर अशोक के बारहवें कार्यकाल का अभिलेख है। गैर-शिलालेख और शिलालेख स्तंभ, स्तंभों पर पशु मूर्तियां, शीर्ष पर पशु और वनस्पति उभार तथा धौली में जीवित चट्टान को गोलाकार रूप में उकेरी गई हाथी की आकृति का अग्र भाग शामिल है।

मौर्यकालीन कला की विशेषताएँ:

- राजकीय कला एवं लोक कला इस तरह मौर्यकाल में दो तरह की कलाएँ थी।
- अधिकांश वास्तुकला लकड़ी से निर्मित थी।
- अशोक द्वारा निर्मित स्तंभों पर धार्मिक शिलालेख अंकित हैं।
- स्तंभों के शीर्ष पर हाथी, बैल और सिंह की आकृतियाँ बनाई गई हैं।
- बुद्ध के अवशेषों की सुरक्षा के लिए कई स्थानों पर स्तूपों का निर्माण किया गया।
- पॉलिश की गई चमकदार गुफाएँ धार्मिक भिक्षुओं के लिए बनाए जाते थे।
- पाषाणयुक्त वास्तु एवं मूर्तिकला पर चमकदार पोलिश किया जाता था।

मूर्तिकला और वास्तुकला के तीन महत्वपूर्ण प्रकार हैं:

1. स्तम्भ और उनके शीर्ष
2. स्तूप
3. गुफाएं

इसके अतिरिक्त रिंगस्टोन, सिक्के, शाही महल, और पाटलिपुत्र शहर आदि भी शामिल है।

1. स्तम्भ और उनके शीर्ष

मौर्य काल में अधिकांश स्तंभों का निर्माण सम्राट अशोक ने करवाया था। भारत समेत कई देशों में स्तंभों का निर्माण हुआ है, उन सभी की कलात्मक शैली अलग-अलग है। लेकिन इसकी संरचना एक जैसी है, जिसमें स्तंभ और स्तंभ-शिखर शामिल हैं। मौर्य काल के स्तंभों के सबसे ऊपरी हिस्से में एक पशु का शरीर है, प्रत्येक स्तंभ में पशु के नीचे एक आधार (गोलाकार अबेकस) है और उसके नीचे एक उल्टा कमल है, जो सभी मौर्य स्तंभों में समान है। स्तंभ की संरचना को स्तंभ के व्यास के घटते क्रम में नीचे से ऊपर तक सरलीकृत किया गया है। स्तंभ का कुछ हिस्सा जमीन के अंदर दबा हुआ है, क्योंकि अधिकांश स्तंभों में चबूतरा नहीं है। अशोक द्वारा निर्मित स्तंभों का उद्देश्य समाज में शांति और न्याय के लिए बौद्ध धर्म का प्रचार और प्रसार करना था। जिस पर बड़ी संख्या में शिलालेख उत्कीर्ण है। धर्म, एकता, शक्ति, साहस और बौद्ध मूल्यों के प्रतीक हैं अशोक स्तंभों पर बने चिन्ह।

मौर्यकालीन स्तंभ एक ही पत्थर से बने थे। ये स्तंभ बलुआ पत्थर से बने थे और इनकी सतह चिकनी और चमकदार पॉलिश की तरह थी। स्तंभों पर शेर, हाथी और बैल की आकृतियाँ थीं जिन्हें शक्ति और समृद्धि का प्रतीक माना जाता था। इन पर ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि में शिलालेख उत्कीर्ण थे।

चित्र 1.
साँची सिंह-स्तंभ

चित्र 2.
सारनाथ सिंह-स्तंभ

चित्र 3.
वैशाली सिंह-स्तंभ

चित्र 4.
रामपुरवा वृषभ

चित्र 5.
लौरिया नंदनगढ़ सिंह-स्तंभ

चित्र 6.
संकिशा हस्ती-स्तंभ

चित्र 7.
रामपुरवा सिंह-स्तंभ

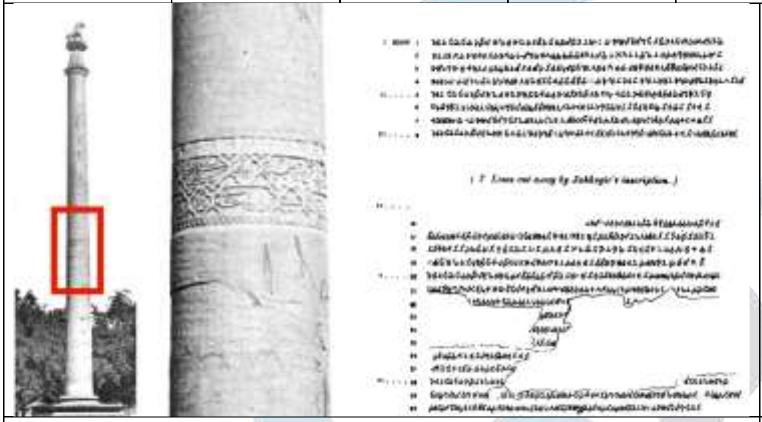
चित्र 8.
इलाहाबाद स्तंभ पर अशोक के शिलालेख

चित्र 9.
दिल्ली-टोपरा स्तंभ पर प्रमुख शिलालेख

<u>सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तंभ:</u>

- साँची का यह सिंह-स्तंभ मध्य प्रदेश राज्य में स्थित है। यह स्तंभ, स्तूप के दक्षिण प्रवेश द्वार के समीप स्थित है। इस पर उकेरे गए चित्र बुद्ध के जीवन की कहानी बताते हैं। ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 1 में स्तंभ का ऊपरी हिस्सा है, इसमें पीठ से पीठ सटाकर खड़े चार शेर बने हुए हैं जिनके चेहरे का कुछ हिस्सा नष्ट हो चुका हैं। इसे भारत के राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में भी इस्तेमाल किया गया है।

- सारनाथ संग्रहालय में सिंह-स्तंभ, सांची स्तंभ की तरह इसमें भी चार शेर पीठ से पीठ सटाकर खड़े हैं, जिसे शक्ति और साहस का प्रतीक मानते है। स्तंभ के शीर्ष के किसी भी हिस्से में कोई क्षति नहीं पहुंची है तथा यह पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 2 में स्तंभ का ऊपरी हिस्सा दिखाया गया है, इसे बलुआ पत्थर में बनाया गया है और यह 7 फीट ऊँचा है। शीर्ष भाग में पशु आकृति के नीचे आधार में अशोक चक्र बना है। यह सिंह-स्तंभ भारत की शक्ति और एकता का प्रतीक है, तथा इसे राष्ट्रीय प्रतीक भी मानते हैं।

- एकल सिंह-शीर्ष स्तंभ यह वैशाली, बिहार में स्थित है। ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 3 में स्तंभ का ऊपरी भाग है, इसमें एकल सिंह शीर्ष बना हुआ हैं। इसका निर्माण लाल बलुआ पत्थर में हुआ है और 18.3 मीटर ऊंचा है। यह स्तंभ बुद्ध के अंतिम उपदेश की याद दिलाता है, इसलिए इसे बौद्ध धर्म के अनुयायी के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। जिसमें सिंह का मुख उत्तर दिशा की ओर है जो बुद्ध की अंतिम यात्रा को दर्शाता है।

- राष्ट्रपति भवन में स्थित रामपुरवा का मूल स्तंभ (300 ई.पू.), स्थान पश्चिमी चंपारण बिहार। ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 4 में वृषभ स्तंभ शीर्ष है। यह पॉलिश किये हुए बलुआ पत्थर से बना है।

- लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ (स्थान पश्चिमी चंपारण बिहार) इस स्तंभ में सिंह का जबड़ा टूटा हुआ है। ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 5 में सिंह-स्तंभ का शीर्ष है। यह बलुआ पत्थर से बना है और इसकी ऊंचाई 32 फीट है।

- संकिशा का हस्ती स्तंभ (300 ई.पू.), ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 6 में हाथी की प्रतिमा बनी है। संकिसा, एक महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थस्थल है। अशोक ने संकिसा में हस्ती स्तंभ बनाया, जो प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म का महत्व बताता है।

- रामपुरवा का सिंह-शीर्ष स्तंभ, ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 7 में सिंह की मूर्ति है। यह कोलकाता के भारतीय संग्रहालय में है, जो बिहार के रामपुरवा नामक स्थान से खोजा गया था।

- इलाहाबाद स्तंभ, यह प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में स्थित है। यह अशोक के स्तंभ शिलालेखों में से एक है। ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 8 में दिखाया गया है।

- फिरोज शाह कोटला में दिल्ली-टोपरा स्तंभ शिलालेख, यह ऊपर दी गई तस्वीरों में चित्र संख्या 9 में मौजूद है। दिल्ली-टोपरा स्तंभ पर सात स्तंभ शिलालेख हैं, जो मुख्य रूप से अशोक के द्वारा बनाए गए हैं। इन शिलालेखों में से छह अन्य जगहों से भी मिले हैं, लेकिन दिल्ली-टोपरा स्तंभ पर ही सातवाँ शिलालेख है। अशोक के धम्म पर विचारों का विस्तार से वर्णन करने वाला सातवाँ शिलालेख अलग है।

- लौरिया अरेराज स्तंभ, भारतीय राज्य बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में स्थित है, यह सम्राट अशोक द्वारा बनाया गया एक प्राचीन शिलालेख स्तंभ है। यह स्तंभ अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है।

- निगली सागर स्तंभ (जिसे निग्लिवा स्तंभ भी कहा जाता है), नेपाल में लुम्बिनी से लगभग 20 किमी उत्तर-पश्चिम में है। यह स्थान कनकमुनि बुद्ध के जन्मस्थान के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ अशोक के स्तंभ के अवशेष मिले हैं।

- रुम्मिनदेई स्तंभ, जिसे लुम्बिनी स्तंभ के नाम से भी जाना जाता है, नेपाल के लुम्बिनी में स्थित है और सम्राट अशोक के काल का है। यह ब्राह्मी लिपि में है और इसमें बुद्ध के जन्मस्थान लुम्बिनी का उल्लेख है। अशोक के इस छोटे स्तंभ-शिलालेख को लुम्बिनी शिलालेख या पडेरिया शिलालेख के नाम से भी जाना जाता है।

- दिल्ली-मेरठ स्तंभ, दिल्ली के उत्तरी चोटी में एक अशोक स्तंभ है। 14वीं शताब्दी में फिरोज शाह तुगलक ने इसे उत्तर प्रदेश के मेरठ से दिल्ली स्थानांतरित किया। अब यह स्तंभ दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर के करीब और बाड़ा हिंदू राव अस्पताल के प्रवेश द्वार के सामने स्थित है।

2. स्तूप

स्तूप बौद्ध वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण रूप है, हालाँकि यह बौद्ध धर्म से भी पहले का है। इसे अक्सर एक दफन स्थल या धार्मिक वस्तुओं का भंडार कहा जाता है। स्तूप सरल शब्दों में, पत्थर से बना एक मिट्टी का दफन टीला है। जिसे भारत एवं अन्य देशों के विभिन्न स्थानो में अलग अलग रूपों में बनाया गया है। अधिकतर स्तूप अंडाकार आकार में बने है। इनमे कुछ स्तूपों के नाम इस प्रकार से है -

सांची का महान स्तूप (रायसेन जिला, मध्य प्रदेश)

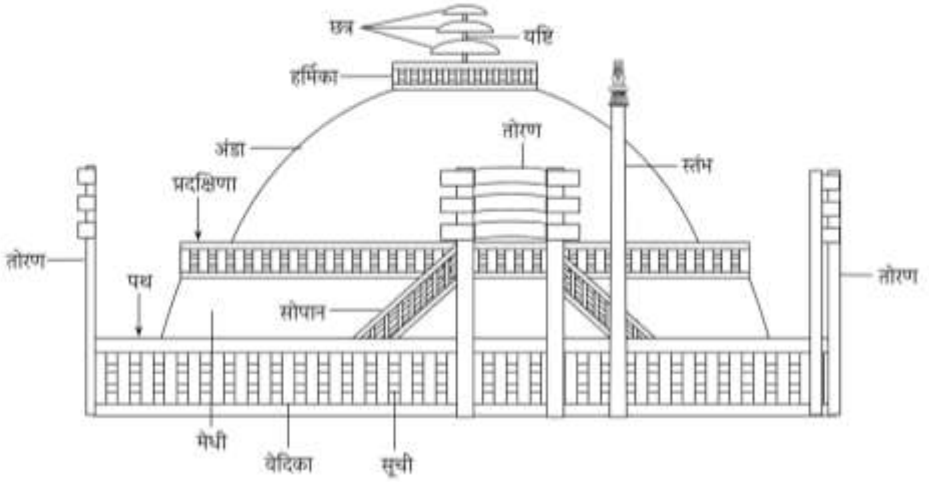

चित्र 10. सांची स्तूप

सांची महास्तूप, स्तूप वास्तुकला के महत्वपूर्ण उदाहरणों में से एक है। यह मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन जिले में स्थित है। इसे एक प्राचीन बौद्ध स्मारक के रूप में भी देखा जाता है तथा बौद्धों के लिए यह एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल था। इसे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक ने बनवाया था तथा स्तूप के गुम्बद की उचाई 16.46 मीटर है। स्तूप की संरचना एक अर्धगोलाकार गुंबद की तरह है, जो चार प्रवेश द्वार (तोरण) और वेदिका (खम्बों की पंक्ति) से घिरा हुआ है। जटिल नक्काशी और मूर्तियां बुद्ध के जीवन की कहानियां बताती हैं। चित्र में उप्परि भाग के त्रि-छत्र संरचना बौद्ध धर्म के तीन रत्नों का प्रतिनिधित्व करती है - बुद्ध, धर्म (सिद्धांत), और संघ (समुदाय)। यष्टि अर्थात् एक केंद्रीय स्तम्भ, यह त्रि-छत्र संरचना को सहारा देता है और ब्रह्मांडीय अक्ष का प्रतीक है। बुद्ध के दो शिष्यों सारिपुत्र और मौद्गल्यायन के अवशेष सांची के स्तूप में रखे गए हैं। सभी स्तूपों में साँची महास्तूप मौर्य कला का सबसे प्रचलीत स्तूप है।

अन्य स्तूप एवं स्थल:

- धमेक स्तूप सारनाथ (वाराणसी, उत्तर प्रदेश), जो बौद्धों के लिए आठ सबसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों में से एक है, ये वह जगह है जहाँ बुद्ध ने अपने पहले पाँच शिष्यों कौंडिन्य, अस्साजी, भद्दिया, वप्पा और महानमा को अपना पहला उपदेश दिया था। इसकी संरचना साँची स्तूप के गुम्बद की तरह नहीं है, बल्कि ठोस सिलेंडर की तरह है।इसका व्यास 28 मीटर और ऊंचाई 43.6 मीटर है। दीवार पर ब्राह्मी लिपि में शिलालेखों के अलावा मनुष्यों और पक्षियों की सुंदर नक्काशीदार आकृतियाँ हैं। छह बार स्तूप को बड़ा किया गया, लेकिन ऊपरी भाग अभी भी पूरा नहीं है।
- अमरावती स्तूप आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में स्थित है। इसका निर्माण तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर लगभग 250 ईसा पूर्व के बीच हुआ था। लगभग 50 ईसा पूर्व में इसका विस्तार किया गया और पुरानी मूर्तियों की जगह नई मूर्तियाँ लगाई गई। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस स्थल को संरक्षित किया है, जहाँ स्तूप और पुरातत्व संग्रहालय स्थित हैं।
- भरहुत स्तूप, मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित यह स्तूप अपनी कला और इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। इसका निर्माण मौर्य और शुंग काल के दौरान हुआ था। इसमें रेलिंग, प्रवेश द्वार और बुद्ध के जीवन और बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को दर्शाती जटिल नक्काशी है।
- धर्मराजिका स्तूप, जिसे तक्षशिला के महान स्तूप के नाम से भी जाना जाता है, पाकिस्तान के तक्षशिला में स्थित एक प्राचीन बौद्ध स्तूप है। ऐसा माना जाता है कि इसे मगध के सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बुद्ध के अवशेषों पर बनवाया था। 1980 में यूनेस्को ने तक्षशिला के स्तूप के खंडहरों को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया।

3. गुफाएं

मौर्यकालीन रॉक-कट वास्तुकला:

सम्राट अशोक द्वारा निर्मित बराबर पहाड़ी गुफाएं:			
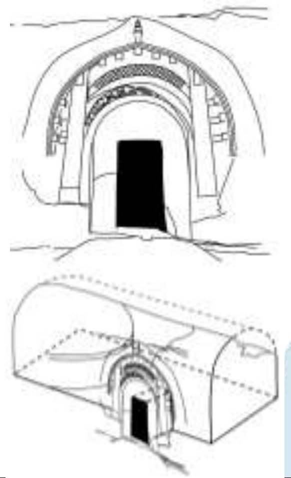	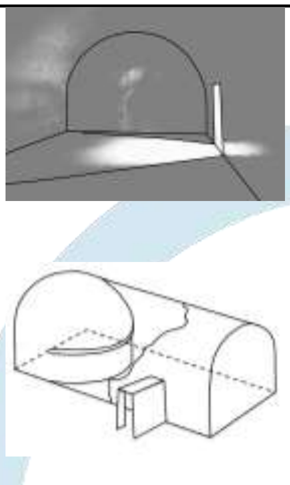	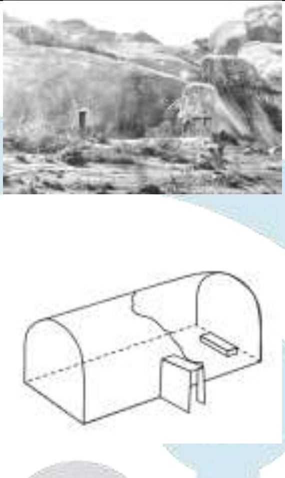	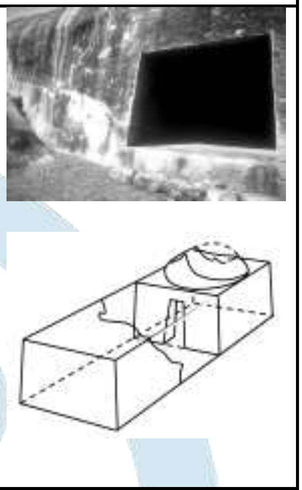
चित्र 11. लोमस ऋषि गुफा	चित्र 12. सुदामा गुफा	चित्र 13. करण चौपड़ गुफा	चित्र 14. विश्वकर्मा गुफा

बराबर पहाड़ी पर सम्राट अशोक ने चट्टान काटकर गुफाएं बनवाई थीं, जिन्हें ऊपर चित्र 11, 12, 13 तथा 14 में दर्शाया गया है। 322-185 ईसा पूर्व की ये बराबर गुफाएँ बिहार के जहानाबाद जिले में स्थित है। तथा यह गया शहर से 31 किमी उत्तर की ओर है। बराबर गुफाओं में लोमस ऋषि गुफा, सुदामा गुफा, करण चौपड़ गुफा और विश्वकर्मा गुफा, ये चार गुफाएं शामिल है। इन गुफाओं का निर्माण मौर्य काल के दौरान धार्मिक सहिष्णुता के प्रतीक आजीविका संप्रदाय के तपस्वियों के लिए किया गया था। ये गुफाएं भारत में चट्टान-काटकर बनाई गई सबसे पुरानी गुफाओं में से हैं। अधिकतर गुफाओं में एक प्रवेश द्वार और दो कक्ष हैं। जो पूर्णतः ग्रेनाइट को तराशकर बनाए गए हैं।

चित्र 11: लोमस ऋषि की गुफा मेहराब जैसी आकृति वाली समकालीन लकड़ी की वास्तुकला की प्रतिकृतियाँ हैं। हाथियों की एक पंक्ति-द्वार के दोनों ओर घुमावदार दरवाज़े के फ्रेम के साथ स्तूप की आकृति की ओर जाती है।

चित्र 12: सुदामा गुफा को मौर्य सम्राट अशोक ने 261 ईसा पूर्व में समर्पित किया था और इसमें एक आयताकार मंडप के साथ एक गोलाकार मेहराबदार कक्ष है।

चित्र 13: करण चौपड़ गुफा में एक आयताकार कमरा है, जिसकी पॉलिश की गई सतह पर शिलालेख हैं। यह 245 ईसा पूर्व के हो सकते हैं।

चित्र 14: विश्वकर्मा गुफा में दो आयताकार कमरे हैं। यहाँ जाने के लिए, अशोक की चट्टानों को काटकर बनाई गई सीढ़ियों का प्रयोग किया जा सकता है।

दशरथ मौर्य द्वारा निर्मित नागार्जुन पहाड़ी गुफाएं:	
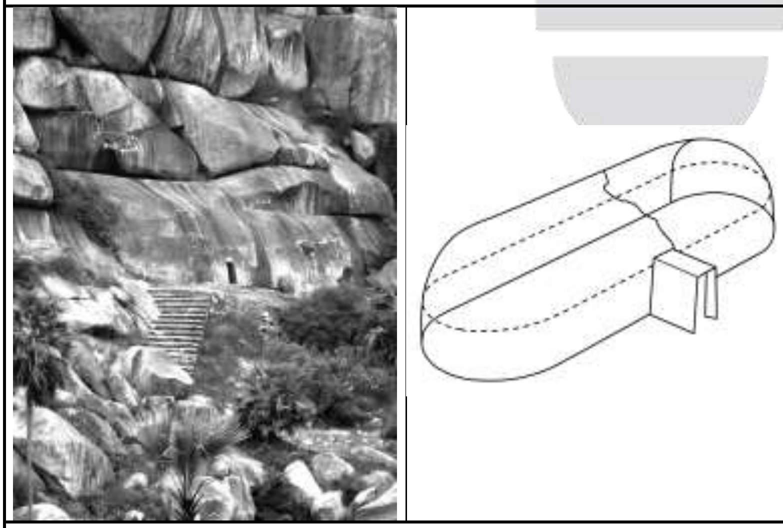	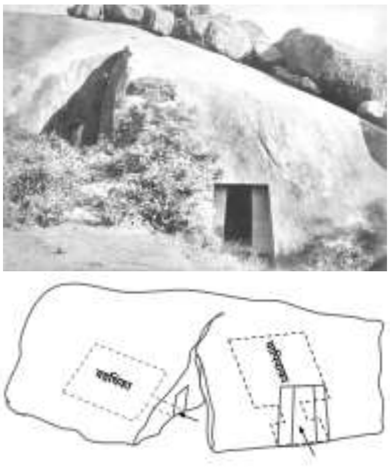
चित्र 15. गोपिका गुफा	चित्र 16. वडथिका और वापियाका गुफाएं

नागार्जुन पहाड़ी गुफाएँ, जिन्हें नागार्जुनी गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है। इन गुफाओं का निर्माण अशोक के पोते दशरथ मौर्य ने करवाया था। आजीवकों के लिए दशरथ मौर्य द्वारा निर्मित गुफाओं के समूह का हिस्सा हैं। यह समूह बिहार के जहानाबाद जिले में बराबर पहाड़ियों पर स्थित है। गोपिका गुफा, वापियाका गुफा और वदाथिका गुफा ये तीनों गुफाएँ नागार्जुन पहाड़ियों में स्थित है। नागार्जुन गुफाएं मौर्य साम्राज्य की हैं और आजीविक समाज का इतिहास और संस्कृति का दर्शन कराती हैं।

© 2025 IJRTI | Volume 10, Issue 5 May 2025 | ISSN: 2456-3315

चित्र 15: गोपिका गुफा, यह एक विशाल चट्टान को काटकर बनाई गई है और यह इस क्षेत्र की सबसे बड़ी गुफा है। शिलालेख के अनुसार, इसे राजा दशरथ ने 232 ईसा पूर्व के आसपास आजीविक धर्म के अनुयायियों को दान में दिया था।

चित्र 16: दशरथ मौर्य ने वापियाका गुफा को भी आजीविका संप्रदाय के अनुयायियों को समर्पित किया था। तथा वडथिका गुफा यह चट्टान की एक दरार में बनी है।

मौर्यकालीन रिंगस्टोन, सिक्के और मूर्तिकला:

चित्र 17. पटना यक्ष एवं शिलालेख	चित्र 18. चांदी का पंच चिन्हित सिक्का	चित्र 19. रिंगस्टोन

चित्र 17: यक्ष एवं शिलालेख, यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पटना में दो स्मारकीय यक्ष खोजे गए, जिनकी ऊंचाई 2 मीटर थी। यह इस ब्राह्मी शिलालेख से प्रारंभ होते हैं ... ("यक्ष..." के लिए याखे...)

1. बाईं मूर्ति पर शिलालेख: "याखे अचुसतिगिका"।
2. दाईं मूर्ति पर शिलालेख: "याखे सनातनंद"।

चित्र 18: मौर्य साम्राज्य में मगध के नंद वंश का चांदी का पंच-मार्क सिक्का यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है, जिस पर चक्र और हाथी के प्रतीक हैं। इस सिक्के पर पाँच प्रतीक देखे जा सकते हैं: सूर्य का प्रतीक, छह भुजाओं वाला (मगध) प्रतीक, पहाड़ी की चोटी पर बैल, चार बैलों से घिरा इंद्रध्वज और हाथी। पीछे की तरफ एक अनौपचारिक प्रति-चिह्न भी है।

चित्र 19: चार देवियों और चार खजूर के पेड़ों वाली रिंगस्टोन, मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट - न्यूयॉर्क में संग्रहित। मौर्य साम्राज्य और उसके बाद शुंग साम्राज्य (187-78 ईसा पूर्व) के दौरान भारत में एक अद्वितीय प्रकार की कलाकृति और लघु मूर्तिकला बनाई गई थी। अधिकांश उन्हें तीसरी या दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का मानते हैं। वे डोनट के आकार का हैं, लेकिन किनारे सीधे, सपाट तल और सादा है। पत्थरों को केंद्र में एक छेद के चारों ओर जटिल नक्काशी और सजावट के कई गोलाकार क्षेत्रों के साथ उकेरा गया है। पूरा होने पर, वे लगभग ढाई से चार इंच व्यास के होते हैं।

मौर्यकालीन मूर्तियों का निर्माण भी तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में माना जाता है। अधिकतर मृणमूर्तियाँ टेराकोटा माध्यम में बनायी जाती थी। जैसे महिला टेराकोटा आकृति, भारतीय ग्राम देवता का मुखिया, मातृ देवी, मथुरा का हाथी, मथुरा का बंदर आदि मौर्यकालीन मूर्तियों में शामिल है।

निष्कर्ष:

मौर्य कला वास्तुकला का एक अद्भुत उदाहरण है। मौर्य वास्तुकला अथवा मूर्तिकला एक ऐसा इतिहास है जो वर्तमान समय में कला को बेहतर बनाने में हमारा मार्गदर्शन करता है। प्राचीन कला हमारे दैनिक जीवन से जुड़ी हुई है, जो मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा करती है जिसमें धर्म, संस्कृति, उपयोगिता शामिल हैं। वास्तुकला में मौर्य स्तंभों, स्तूपों और गुफाओं का उपयोग सराहनीय है। इंटीरियर डिजाइनर वर्तमान में बहुत लोकप्रिय शब्द है, जो हमारे घर को सुंदर बनाने में योगदान देता है। जिसकी मदद से घर को हर दृष्टिकोण से बेहतर बनाया जाता है, जिसमें वास्तु शास्त्र, चित्रकारी, नक्काशी, अलंकरण, आधुनिकीकरण आदि जैसे मुद्दों को ध्यान में रखा जाता है। इसीलिए भविष्य में मौर्य कला को संग्रहालयों और कला दीर्घाओं में संरक्षित रखना आवश्यक है।

संदर्भ:

1. https://bharatdiscovery.org/india/मौर्यकालीन_कला
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/मौर्यकालीन_स्थापत्य_या_वास्तु_कला
3. Joshi, Tarun (2010). "मौर्यकालीन स्थापत्य एवं वास्तु कला"
4. https://en.wikipedia.org/wiki/Pillars_of_Ashoka
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Allahabad_Pillar#/media/File:Major_Pillar_Edicts_1-6_on_the_Allahabad_pillar_of_Ashoka.jpg
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Major_Pillar_Edicts#/media/File:Delhi-Topra_pillar_edicts.jpg
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Barabar_Caves#/media/File:Karna_Chopar_cave_BL.jpg
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Barabar_Caves#/media/File:Barabar_Visvakarma_Cave.jpg
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Barabar_Caves#/media/File:Barabar_Caves_-_Staircase_and_Cave_Entrance_(9224886169).jpg
10. https://en.wikipedia.org/wiki/Barabar_Caves#/media/File:Vadathika_and_Vapiyaka_caves_BL.jpg
11. https://en.wikipedia.org/wiki/Mauryan_art#/media/File:Patna_Yakshas_and_inscriptions.jpg
12. https://en.wikipedia.org/wiki/Mauryan_art#/media/File:MauryanCoin.JPG
13. https://hi.wikipedia.org/wiki/मौर्यकालीन_स्थापत्य_या_वास्तु_कला#/media/चित्र:Ringstone_MET_DT9196.jpg